अक्षर

68

संस्मरण / स्मरण अंक

अक्षर

विचारशीलता और बौद्धिक हस्तक्षेप का उपक्रम

सम्पादक
प्रियंवद

उप सम्पादक
जीवेश प्रभाकर

वर्ष : 24 - अंक : 68
अक्टूबर -2024

यह अंक
https://notnul.com
पर उपलब्ध है ।

एक प्रति	- 50 /- रु.
वार्षिक सदस्यता	- 250/- रु.
संस्थागत वार्षिक सदस्यता	- 400/- रु.
तीन वर्ष की सदस्यता (व्यक्तिगत)	- 700/- रु.
तीन वर्ष की सदस्यता (संस्थागत)	- 900/- रु.
आजीवन सदस्यता (व्यक्तिगत)	- 2000/- रु.
संस्थागत आजीवन सदस्यता	- 3000/- रु.

(पत्रिका के समस्त सदस्यता शुल्क मे रजिस्टर्ड डाक खर्च सम्मिलित है।)

प्रकाशक: अकार प्रकाशन, B -204, रतन सैफ़ायर,16/70,सिविल लाइन्स कानपुर - 208001
ई मेल - akarprakashan@gmail.com
सम्पर्क :
प्रियंवद
B -204, रतन सैफ़ायर,,16/70, सिविल लाइन्स कानपुर - 208001
ई मेल - priyamvadd@gmail.com (मो.) 9839215236

जीवेश प्रभाकर :
69/2113, रोहिणीपुरम -2, रायपुर-492001 (छ.ग.)
ई मेल - jeeveshprabhakar@gmail.com मो. - 09425506574
आवरण :- जीवेश प्रभाकर
मुद्रक
सांखला प्रिंटर्स, विनायक शिखर, बीकानेर - 334003, फोनः - 0151-2242023
कम्पोज़िंग
विकल्प विमर्श, 87 निगम कॉलोनी, रायपुर - 492 001
सम्पादन व संचालन अवैतनिक । समस्त विवाद कानपुर न्याय क्षेत्र के अन्तर्गत होंगे । पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के विचार सम्बन्धित लेखक के अपने हैं । सम्पादक अथवा प्रकाशक का उससे सहमत होना अनिवार्य नहीं है ।

आप 'अकार' के लिये धन राशि अपने क्षेत्र के 'बैंक ऑफ बड़ौदा' की किसी भी ब्रांच में जमा करा सकते हैं। 'अकार' के खाते के ब्यौरे नीचे दिए जा रहे हैं। आपको 'अकार' के खाते में राशि जमा कराने के लिये शुरू के चार ब्यौरों की जरूरत पड़ेगी। नेट द्वारा जमा कराने पर शेष दो ब्यौरे भी काम आएंगे।

Name of the Firm which Holds the bank Account :- AKAR PRAKASHAN
Bank Name :- Bank of Baroda, Bank Adress :- Panki, Site - 1, Kanpur - 208002.,
Bank Account No.- 09620200000089 MICR Code :- 208012012
IFSC Code :- BARB0PANKIX (0 is ZERO, NOT ALPHABETICAL O)

अनुक्रम

1. अकथ : *प्रियंवद* 06

2.आग़ा हश्र कश्मीरी - *रामनाथ सुमन, मंटो, चिराग़ हसन* 09

3. बदीउज़्ज़मां, जैसा मैंने उन्हें जाना - *ज़किया मशहदी* 31

4. ढाई बरस का ढाई आखर - *प्रकाश चंद्रायन* 39

5. हमीद दलवाई - *डॉ. हमीद नरेंद्र दाभोलकर* 47

6. किताब में सूखे हुए फूल की मानिंद... *जितेन्द्र भाटिया* 60

7. आंतरिक अनुभूतियों का शिल्पी :
आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री ... *वीरेन नंदा* 82

8. कब याद में तेरा साथ नहीं : यादें ख़ैयाम की – *यूनुस ख़ान* 101

9. कोमल दा : लोक संस्कृति के द्वन्द्वात्मक अन्वेषक - *नन्दकिशोर आचार्य*.....108

10.विराट का वैभव और कुमार गन्धर्व ! -*प्रकाश कान्त* 113

11. कवि–जीवन की अन्तर्यात्रा - *जीवन सिंह* 120

12. फताड़ू के नबारुण - *लाल्टू* 132

13. दरम्यानी गली से उठी नगाड़े की धमक - *सुधीर विद्यार्थी* 144

14. शम्सुर्रहमान फ़ारूक़ी - *ख़ान अहमद फ़ारूक़* 156

15. विजय तेंदुलकर - *सतीश पावडे* 176

16. परिशिष्ट - 186

यह अंक

इस अंक को निकालने के पीछे कोई बड़ा तर्क या विचार नहीं था, सिवाय इस अनुभव के, कि किसी भी तरह के संस्मरण को अधिक रुचि से और अधिक पढ़ा जाता है। पढ़ते समय स्वयं का अनुभव भी यही था । संस्मरण हमेशा ज्यादा आकर्षित करते थे, खासतौर से व्यक्ति केन्द्रित । साथ ही यह पहलू भी था कि किसी भी व्यक्ति या घटना या इतिहास के किसी दौर, शहर या देश को समझने का सबसे प्रामाणिक और भरोसेमंद स्रोत संस्मरण होते हैं । उनमें दी गयी किसी भी जीवन की अंतरंग बातें या फिर बेहद नज़दीक से देखी गयी सच्चाइयाँ, उस जीवन के विश्लेषण, मनोविज्ञान और उसके इस तरह होने को समझने की विश्वसनीय कुंजी का काम करते हैं । स्टालिन की सच्चाइयों को बेटी स्वेतलाना के अलावा क्या कोई और लिख सकता था?

अ मा र 68

दुनिया में असंख्य लोगों पर अंसख्य संस्मरण लिखे गए हैं । एक उड़ती निगाह डालें तो ऐसी पुस्तकों की लम्बी श्रृंखला है। मंटो, प्रकाश पंडित, रामनाथ सुमन, अजीत कौर, बलवंत गार्गी, वेद मेहता ऐसे कुछ और नाम अचानक दिमाग में आ जाते हैं । इनके अलावा लगभग हर बड़े राजनीतिज्ञ, चाहे ख्रुश्चेव हों या एन्थनी ईडन या मैकमिलन या फिर पत्रकार जैसे खुशवंत सिंह, कुलदीप नैयर, फ्रैंक मोरेस, एडगर स्नो, सबने संस्मरण लिखे हैं। आत्मकथाओं, डायरियों और यात्रा वृत्तान्तों में भी संस्मरण होते हैं। लगभग हर बड़े लेखक, दार्शनिक, कलाकार पर संस्मरण मिल जाते हैं। इतिहास की प्रमुख घटनाओं पर संस्मरण होते हैं। नाज़ी जर्मनी हो या हमारे देश का बँटवारा, संस्मरण इनकी बेहद सूक्ष्म और छिपा कर रखी गयी सच्चाईयों को बेपर्दा कर देते हैं । 1857 के ईद गिर्द हो रही घटनाओं और उस हौलनाक दौर को भोगने वाले जीवन के अनेक संस्मरण हैं। देश और शहरों पर संस्मरण हैं। इसी नज़रिए और इसी अनुभव के कारण 'अकार' का यह अंक इस रूप में प्रकाशित करना सोचा गया ।